अश्विनी जी के असामयिक निधन से हम सब क्लीन बोल्ड

मेजर जनरल नीलेन्द्र कुमार

आगरा में 24 जुलाई 1999 को अश्विनी कुमार चतुर्वेदी के निधन से हमारे समाज के एक प्रख्यात क्रिकेट खिलाड़ी तथा होलीपुरा के एक सच्चे सेवी नहीं रहे।

अस्सो जी के नाम से प्रसिद्ध अश्विनी जी का जन्म दो अक्तूबर 1936 को होलीपुरा में हुआ था। उनके पिता श्री प्रागदास ;देई बाबूद्ध समाज के लोकप्रिय तथा सम्मानित हस्ती थे। अश्विनी जी की प्रारम्भिक शिक्षा होलीपुरा तथा उसके बाद पढ़ाई कानपुर तथा आगरा में हुई। एम0काम की परीक्षा उन्होंने प्रथम श्रेणी में पास की।

बचपन से ही अस्सो जी को क्रिकेट का बहुत शौक था। वह बहुत आक्रामक तथा स्टाइलिश बल्लेबाज थे। अपने कॉलेज तथा विश्वविद्यालय टीम के सर्वाधिक लोकप्रिय खिलाड़ी थे। आगरा यूनिवर्सिटी की टीम के लिए उन्हें 1954 में चुना गया। संगठन तथा नेतृत्व की खूबियों के कारण टीम के प्रमुख बल्लेबाज ही नहीं, कप्तानी का बोझ भी प्रायः उन्हें सौंपा गया था। 1955 से लेकर अगले बारह वर्ष उनकी गिनती उत्तर तथा मध्य भारत के सबसे उदीयमान व भरोसेमंद बल्लेवाजों में की जाती थी। विभिन्न समय पर उन्होंने कम्बाइन्ड यूनिवर्सिटी दल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश की रन ज ी टीम तथा मध्य जोन एकादश का प्रतिनिधित्व किया।

तत्कालीन चुनावकर्ता तथा मशहूर खिलाड़ी लाला अमरनाथ ने उन्हें भारत के दौरे पर आई हुई एम0सी0सी0 टीम के विरुद्ध प्रेसीडेन्ट एकादश में खलने के लिये चुना। प्रसिद्ध खेल पत्राकार सुशील चतुर्वेदी के शब्दों में, ''क्रिकेट से उन्हें बहुत लगाव था तथा खेल की रणनीति की बारीकियों को समझते थे। अश्विनी जी एक नेचुरल स्ट्रोक प्लेयर थे। विकेट पर आने के बाद उन्हें अपनी बैटिंग दिखाने में समय नहीं लगता था। वह किसी भी प्रकार के विकेट पर पहली गेंद से ही क्रिकेट की किताबों में वर्णित हर स्ट्रोक खेलने में सक्षम थे। उनकी बल्लेबाजी का तरीका आकर्षक था। बेशक वह चालीस पचास रन बनाएं लेकिन दर्शकों को उनका खेल देख कर मजा आ जाता था। उस प्रकार की बल्लेबाजी में उनकी तुलना में केवल जयसिम्हा का नाम लिया जा सकता है।''

टेस्ट टीम में चुने जाने के लिये अश्विनी जी को पटौदी, नारी कान्ट्रेक्टर या जयसिम्हा के मुकाबले में आंका गया। मध्य जोन की कप्तानी में उनके नीचे खेलने वालों में उदयपुर के महाराणा, किशन रुंगटा, राजसिंह डूंगरपुर, तथा सलीम दुरानी का नाम उल्लेखनीय है। सैंतीस प्रथम श्रेणी के मैच की पैंसठ पारियां खेलते हुए अश्विनी जी छह बार नॉट आउट रहे। उन्होंने 35.18 के औसत से कुल 2076 रन बनाए जिसमें उनका सर्वाधिक स्कोर 130 नॉट आउट था। इन संख्या में तीन शतक तथा 10 अर्ध शतक हैं। आठ कैच लिए।

प्रतिभा तथा काब्लियत के बावजूद अस्सो जी को भारतीय टेस्ट टीम में खेलने का मौका नहीं मिला। इस सम्बन्ध में यह उल्लेखनीय है कि उन दिनों लिमिटेड ओवर या वन डे का प्रचलन न होने के

कारण खेलने का मौका केवल टेस्ट मैच में था। अतः भारतीय टीम में खेलने का अवसर सीमित होता था। इसके अलावा, राष्ट्रीय टीम में शामिल होने के लिये बम्बई के खिलाड़ियों का प्रभुत्व था। अन्य प्रान्तों के खिलाड़ियों का भारत के लिये चुना जाना बहुत मुश्किल था। इसके अतिरिक्त बैंक में सीनियर ओहदों पर कार्यरत अस्सो जी को क्रिकेट खेलने के लिये पूरा समय निकाल पाने की भी पूरी छूट नहीं थी।

अस्सो जी के समकालीनों तथा प्रगाढ़ मित्राों में राजसिंह डूंगरपुर, इन्द्रजीत सिंह, अव्वास अली बेग, हनुमन्त सिहॅ, अरुण मिश्रा, सुभाष झांझी तथा राज भार्गव थे। राजसिंह से उनके बहुत घनिष्ठ सम्बन्ध थे। बम्बई में लता मंगेशकर जी से उनकी नजदीकी मित्राता थी।

प्रथम श्रेणी से अवकाश प्राप्त करने के बाद वह बम्बई स्थित क्रिकेट क्लब ऑफ इंडिया से जुड़े रहे। सी0सी0आई0 की टीम के साथ उन्होंने पाली उम्रीगर के नेतृत्व में 1966–67 के दौरान ऑस्ट्रेलिया का दौरा किया। सिंगापुर क्लब की टीम के कप्तान चुने जाने वाले वह प्रथम एशियाई थे। सिंगापुर के स्थानीय खिलाड़ी तथा ब्रिटिश खिलाड़ियों के विरोध के बावजूद, वह ऑस्ट्रेलिया एवं न्यूजीलेन्ड के सहयोग से उस प्रख्यात क्लब के कप्तान नियुक्त किए गए।

अस्सो जी ने अपने केरियर का प्रारम्भ पंजाब नेशनल बैंक से किया। उनकी नियुक्ति सीधे उच्च अधिकारी काडर में की गयी थी। बाद में उन्हें बैंक ऑफ इंडिया, एशियन बैंक, बेल्श फार्गो बैंक ऑफ अमेरिका तथा बैंक ऑफ ओमान में सीनियर पद पर कार्य करने के लिये चुना गया। एक लम्बे अरसे तक इन्दौर, बम्बई, दिल्ली, सिंगापुर तथा मलयेशिया में वरिष्ठ पदों पर उन्होंने 28 वर्ष कार्य किया।

बैंक सेवा से रिटायर होने के बाद वह दिल्ली में रहते थे। होलीपुरा से इन्हें विशेष अनुराग था। दामोदर कॉलेज की कार्यकारिणी समिति के कर्णधार के रूप में उन्होंने विशिष्ट सेवा की। होलीपुरा से उनका लगाव केवल उनके अपने परिवार या जाति बांधवों तक ही सीमित नहीं था। पूरे ग्राम के उत्थान तथा विकास के लिये वह सदैव तत्पर रहते थे।

होलीपुरा ग्राम के कुछ बेरोजगार नवयुवकों को काम दिलवाने की उनकी हार्दिक इच्छा थी। उनके आग्रह पर मैंने उन लड़कों की योग्यतानुसार उन्हें फौज में कमीशन प्राप्त करने या भर्ती होने के लिए निर्धारित प्रणाली बता दी थी। ग्राम के परिवारों की आर्थिक स्थिति सुधारने की दृष्टि से बेरोजगार नौजवानों को काम दिलवाने के लिये वह बहुत इच्छुक थे।

लोकसभा के भूतपूर्व सदस्य दद्दा शम्भूनाथ जी का वह बहुत सम्मान करते थे। उनसे दिल्ली नोइडा में रहने की स्थिति में वह नियमपूर्वक सप्ताह में कम से कम एक बार अवश्य मिलते थे। शम्भू दद्दा के अस्वस्थ होने पर या अन्य किसी प्रकार की आवश्यकता पड़ने पर वह तुरन्त उनके पास चले जाते थे। शम्भू दद्दा के प्रभाव से ही उन्होंने स्वयं खादी का प्रयोग शुरु किया। पूरी आस्था के साथ भगवत गीता का अध्ययन तथा मनन किया।

अश्विनी जी की समवयस्क शैलेन्द्र जी ;गुग्गोद्ध से बहुत अंतरंगता थी। दोनों के घनिष्ठ सम्बन्ध तथा परस्पर आदर भाव अंत तक बना रहा।

अश्विनी जी का व्यक्तित्व सीधा और सरल था। किसी भी प्रकार की बनावटता उनमें नहीं थी। वह अधिक मिलनसार नहीं थे लेकिन जिस किसी से एक बार उन्हें लगाव हो जाता था, उसके लिए उनके हृदय द्वार सदैव खुले रहते थे। दिल्ली प्रवास के दौरान मुझे कई बार उनकी मेहमान नवाजी का लुत्फ उठाने का सौभाग्य मिला था।

अश्विनी जी की पत्नी नन्दी जी भी उन्हीं के समान जिन्दा दिल हैं। शालीनता और सज्जनता की प्रतिभूर्ति। समाजसेवा और शारीरिक रूप से अपंग या असहाय व्यक्तियों के लिए उनके हृदय में बहुत अनुराग है। वातावरण के प्रति सजीव हैं। पौधों और बागवानी का उन्हें शौक है। प्रतिदिन अपने पौधों व गमलों के रख रखाव में वह पर्याप्त समय लगाती हैं। घर में आने वाले हर अतिथि की वह बहुत जिन्दादिली से खातिर करती हैं।